छात्राओ के द्वारा पू. गुरुदेव श्री की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में प्रश्नमंच का आयोजन - - - -

निर्देशिका राजकुमारी जैन

आत्मवैभव की 47 शक्तियो मे 9-10 शक्ति सर्वदर्शित्व और सर्वज्ञत्व शक्ति पर पू. गुरुदेव श्री के प्रवचन के आधार से प्रश्न-उत्तर

1) प्र. गुणो को सामान्य कब कहते है और विशेष कब कहा जाता है।

उत्तर- द्रव्य को जब सामान्य कहा जाता है तब गुणो को विशेष कहा जाता है और पर्याय को जब विशेष कहा जाता है तब गुणो को सामान्य कहा जाता है सामान्य को माने बिना विशेष का ग्रहण नहीं होता है।

. 2 भगवान आत्मा में ऐसी कौनसी शक्ति है जिसके कारण सभी शक्तियाँ एक दूसरे में व्याप्त होकर अखंड रहती है।

उत्तर- भगवान आत्मा मे एक विभुत्व नामक शक्ति है जो स्वंय सभी शक्तियो मे व्याप्त है इसके कारण सभी शक्तियाँ एक दूसरे मे व्याप्त है और भगवान आत्मा अखंड है

प्र. 3 सर्वदर्शित्व शक्ति किसे कहते है।

एक साथ एक समय में सत्ता मात्र को ग्रहण करना ही सर्वदर्शित्व शक्ति है।

प्र. 4 सर्वदर्शित्व शक्ति को कब माना, वह कब नहीं माना कहा जायेगा।

उ- यहाँ अकेला दर्श और ज्ञान शक्ति को जानने व देखने की बात नहीं है, सत्ता मात्र को ग्रहण करके उस रूप परिणमन करना ही सर्वदर्शित्व शक्ति को मानना कहा जायेगा।

प्र 5 प्रथम में क्या करना चाहिए किस उदा. से सिद्धान्त को स्पष्ट किया है।

उ - सब बातो को छोड़कर प्रथम आत्मा को जानना चाहिए। स. गा. 17 के आधार से धन का अर्थी पुरुष पहिले तो यह जाने कि यह राजा है फिर श्रद्धान करे कि यह अवश्य ही राजा है। तब धन की प्राप्ति होगी उसी प्रकार प्रथम तो आत्मा को जानना चाहिए फिर श्रद्धान करना कि मैं अवश्य ही आत्मा हूं। तब आत्मा की अनुभूति होगी जाने बिना श्रद्धान किसका, उसी से साध्य की सिद्धी होगी।

प्र. 6 सर्वज्ञत्व शक्ति किसे कहते है

उ अकेला जानना नहीं, जानने रूप परिणमन ऐसा आत्म ज्ञानमयी सर्वज्ञत्व शक्ति वाला मैं हूं।

प्र. 7 सर्वदर्शित्व व सर्वज्ञत्व शक्ति में क्या अन्तर व क्या समानता है।

उ (1) समस्त विश्व को सामान्य भाव से देखने रूप से परिणत आत्मा दर्शनमयी है वह सर्वदर्शित्व शक्ति है

समस्त विश्व को विशेष भावों को जानने रूप से परिणत आत्मा ज्ञानमयी है

(2) सर्वदर्शित्व शक्ति से आत्मा दर्शनमयी है सर्वज्ञत्व शक्ति से आत्मा ज्ञानमयी है

(3) सामान्य भाव को ग्रहण करती है, विशेष भाव को ग्रहण करती है

(4) सर्वदर्शित्व शक्ति देखने रूप है, सर्वज्ञत्व शक्ति जानने रूप है दोनों ही शक्तियाँ मूलत: आत्ममयी ही हैं

प्र. 8 आत्मा ज्ञानवाला है आत्मा ज्ञानमय है इन दोनो में क्या अन्तर है

उ - आत्मा ज्ञान वाला है यह भेदरूप कथन हुआ आत्मा ज्ञानमय है यह अभेद कथन हुआ और अभेद अखंड के आश्रय से ही अनुभूति है

—x—

अन्य प्रश्न —

(1) प्र षट्कारक द्रव्य है या गुण है या पर्याय है उसको जानने से क्या लाभ है

उ - षट्कारक सामान्य गुण है इनको जानने से यह लाभ है कि -

(1) पराधीनता नष्ट होती है स्वाधीनता प्रगट होती है

(2) मैं ही मेरा कर्ता हर्ता इस प्रकार के निर्णय से

3 भेदज्ञान प्रगट होता है, निर्मय परिणति प्रगट होती है
(4) दृष्टि स्वभाव सन्मुख होकर कृतकृत्य हो जाते हैं
प्र. 2 सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में उत्कृष्ट साधन कौन है
उ- उस समय की पर्याय की योग्यता ही उत्कृष्ट साधन हैं
श्रद्धा गुण त्रिकाली कारक है, मिथ्यात्व प्र. अभाव रूप
कारक है, दर्शन मोहनीय का अभाव निमित्त कारक है
प्र. 3 आत्मा ज्ञायक है ज्ञान की पर्याय ज्ञेय है ऐसा ज्ञेय
ज्ञायक संबंध मानना उचित है क्या।
उ - ज्ञायक व ज्ञान में भेद करना व्यवहार है आत्मा ही
ज्ञायक व आत्मा ही ज्ञेय यह, अभेद रूप ही पर्याय है
ज्ञायक तो बस ज्ञायक ही है
प्र. 4 वस्तु की स्थिति एक रूप नहीं रहती है इसको हम
अपने जीवन में कैसे घटायेगे।
उ- जो वस्तु है उसका एक-एक समय में बदलना उसका
स्वभाव है
(1) पहिले तो यह आदमी हमारी प्रसंशा करता था
फिर यह हमारी निंदा क्यों करने लगा हो अरे
अरे वस्तु की स्थिति एक रूप नहीं रहती है
(2) पहिले हमें बहुत याद रहता था अब याद नहीं
रहता है वस्तु की स्थिति एक रूप नहीं रहती है
(3) इन्द्रभूति पहिले गृहित मिथ्यात्वी था अब गणधर
कैसे हो गया। वस्तु की स्थिति एक रूप नहीं
रहती है। इसी के आश्रय से निर्विकल्प हुआ जायेगा।
प्र. 5 अपनी निंदा व प्रसंशा सुनकर ज्ञानी व अज्ञानी क्या
विचार करता है।
उ ज्ञानी विचारता है कि
(1) गाली व प्रसंशा शब्दों का परिणमन है

जो व्यक्ति विशेष गाली दे रहा है वह उसका कर्ता नहीं है, अज्ञानी मानता है मेरी निंदा हुई इसने मुझे गाली दी इसलिए अज्ञानी द्वेष से दुःखी है ज्ञानी दुःखी नहीं होते हैं

(२) मैं ज्ञायक स्वभावी भगवान आत्मा अरूपी हूँ यह मुझे देख नहीं सकता है तो गाली कैसे दे सकता है ऐसा ज्ञानी विचार कर अरूपी तत्व का आनंद लेता है

अज्ञानी जीव ने शरीर व नाम को देखकर निंदा करता है शरीर व नाम मेरा नहीं है मैं अशरीरी हूँ मेरा नाम शुद्धात्मा है इसलिए दुःखित होता है, प्रसन्न रहता है

सम्यक चिंतन ही सुख का कारण मिथ्याचिंतन ही दुःख का कारण है।

प्र. 6 करण लब्धि मे आने पर बुद्धिपूर्वक क्या पुरुषार्थ चलता है।

उ उपयोग को आत्मा मे तद्रूप, तन्मय करता है बस यही पुरुषार्थ के बलपर अन्तर्मुहूर्त मे सम्यग्दर्शन को प्राप्त कर लेता है।

= इस प्रकार प्रश्न- उत्तर का क्रम यही समाप्त होता है। कुल टोटल पाँच पृष्ठ है

= आत्मार्थी स्वाति जैन, आत्मार्थी शुचि जैन। आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली - - -